E-ISSN: 2706-8927
P-ISSN: 2706-8919
www.allstudyjournal.com
IJAAS 2020; 2(3): 621-622
Received: 10-06-2020
Accepted: 06-07-2020

डॉ0 अखिलेश कुमार मिश्र
अतिथि प्राध्यापक, मैथिली विभाग, के0पी0 कॉलेज, मुरलीगंज, मधेपुरा, भूपेन्द्र नारायण मंडल विश्वविद्यालय, मधेपुरा, बिहार, भारत

Corresponding Author:
डॉ0 अखिलेश कुमार मिश्र
अतिथि प्राध्यापक, मैथिली विभाग, के0पी0 कॉलेज, मुरलीगंज, मधेपुरा, भूपेन्द्र नारायण मंडल विश्वविद्यालय, मधेपुरा, बिहार, भारत

दहेज रूपी कुरीति पर मणिपद्मक नाट्य रचनाक प्रहार

डॉ0 अखिलेश कुमार मिश्र

प्रस्तावना –

लोक साहित्यक विशेषज्ञ, गद्य, पद्य ओ नाट्य विधा मे विपुल रचनाक रचनाकार, स्वतंत्रता सेनानी तथा होमियोपैथी डॉक्टर व्रजकिशोर वर्मा मणिपद्मक पैतृक दरभंगाक वहेड़ा थिक। हिनक जन्म 1918 ई0 मे तथ मृत्यु 1986 ई0 में भेल। ई बहुभाषाविद् तथा आरम्भ में हिन्दीक सेवाक पश्चात् मैथिली मे आवि स्थापित भेलाह। मैथिलीक सब विधा में धुरझार कलम चलेवा मे विहाड़ि वर्माजीक जतेक रचना प्रकाशित अछि, ताहि सँ कतेक अधिक वेसी रचना अप्रकाशित स्थिति मे अछि। ई कविता निबंध, यात्रावर्णन, शिकार साहित्य, उपन्यास, कथा एकांकी नाटक ओ संस्मरण सब किछु लिखलनि। हिनक अनुवाद कार्य से हो अछि।

विद्वत समाज मे ''काव्येषु नाटकं रम्यं'' केर लोकोक्ति प्रचलित अछि। तें सहजहि प्रश्न उठेछ जे काव्य मध्य नाटके रम्य किएक वूझल जाइध। एहि ठाम हम एकरे विचार कऽ रहलछी।

नाटकक मध्य किछु एहन विशेषता पाओल जाइत अछि जे अन्यान्य काव्य मध्य नहि पाओल जाइत अछि। सर्वप्रथम नाटकक उत्पत्तिक सम्बन्ध मे भरत मुनि कहैत छथि जे एक वेर इन्द्रादि प्रमुख देवता ब्रह्माक निकट पहुँचलाह तथा हुनका सँ एहन खेलक याचना कएलैन्हि जे सुनलो जा सकए तथा देखलो जा सकए।[1] ब्रह्मा जे तखन एहि दूनू विशेषता एकर महत्ता कें बढ़ा दैछ। कारण काव्यक आन-आन भेद एकहि संग देखल आ सूनल नहि जा सकैत अछि। दृश्य आओर श्रव्य दूनू एकहि संग होएवाक कारण नाटक काव्यक अन्यान्य भेद सें सून्दर वूझल जाइत अछि।

नाट्यवेदक निमार्णक सम्बन्ध मे भरत मुनि कहैत छथि जे ब्रह्मा ऋगवेद सें पाठ्य अर्थात कथोपकथन, सामवेद सँ गीत यजुर्वेद सें अभिनय तथा अर्थवेद सें रस लए नाट्यवेदक निर्माण कएलैन्हि।[2] एहि सँ श्वात भेल जे नाटक मे कथोपकथन, गीत, अभिनय तथा रसक समावेश होइछ। एहि संसार मे प्राणी से हो विभिन्न रूचिक अछि। ककरो सुन्दर ललिचगर सवल कथोपकथन सुनवा मे विशेष आनन्द भेटैत छैक, तँ ककरो मधुर गीत विशेष आकृष्ट करैत छैक। एहिना ककरो अभिनय मे विशेष आनन्द भेटैत छैक। तँ ककरो सुन्दर ललिचगर सवल कथोपकथन सुनबा मे विशेष आनन्द भेटैत छैक, तँ ककरो मधुर गीत विशेष आकृष्ट करैत छैक। एहिना ककरो अभिनय मे विशेष आनन्द भेटैत छैक। एहू अभिनय मध्य केओ आंगिक अभिनय सँ तँ केओ वाचिक अभिनय सँ तँ केओ अहार्याभिनय सँ तँ केओ सात्विक अभिनय सँ विशेष आनन्दित होइत अछि। सहृदय लोकनि नाटक मे निहित रसे सँ विशेष आनन्द उठवैत छथि। एहि सँ ई स्पष्ट अछि जे नाटक सँ विभिन्न रूचिक लोक एकहि संग विशेष आनन्द उठा सकैत अछि। कवि कुल – गुरू कालिदास से हो एही तथ्य कें स्वीकार कएलैन्हि अछि ''नाट्य भिन्नरूचेर्जनस्य वहुधाप्येकं समाराधकम्''।[1]

एकर अतिरिक्त नाटक सँ लोक कँ धर्म, अर्थ, यश उपदेश प्राप्त होइछ। ई लोक कें सव कर्म कें देखैनिहार होइछ। संगहि सब शास्त्रार्थ सँ युक्त तथा सव शिल्प देखओनिहार थीक।[2]

पुनः नाटक मे सभ प्रकारक व्यक्ति कें विश्रामक अनुभव होइत छैक।[3] विश्रामक इच्छा मनुस्य मे स्वभाविक छैक। विश्रामक इच्छा मनुस्य मे स्वभाविक छैक। नन्दिकेश्वर अपन ''अभिनय – दर्पण'' मे नाटकक पक्ष मे एतेक दूर धरि कहि देलैन्हि अछि जे एहि मे ब्रह्मानन्दो सँ विशेष आनन्द भेटैछ।[4] वामन से हो नाटक कें श्रेष्ठ मानलैन्हि अछि।[5] एकर कारणक उल्लेख करैत कहैत छथि जे नाटक चित्रपट जकाँ विशेषता सभ सँ युक्त होइत अछि।[6]

तेसर कनियाँ 1986 ई0 मे कर्ण गोष्ठी कलकत्ता सँ प्रकाशित नाटक थिक। नाटककारक मन्तव्य द्रष्टव्य अछि – ई नाटक तेसर कनियाँ माननीय उत्पीड़नक करूण कथा अछि आ नारीक जरैत अंग – अंगक निस्सहाय आ बेपनाह व्यथा अछि। हम समाज सँ एतवे कहय चाहैत छी जे – तोहर कोठें करेजक कौसर अहिठाम छौक। ई एकटा ज्वलन्त सामाजिक समस्या दहेज प्रथा पर आधारित अछि। वूझि पड़ैत अछि जे नाटककार इच्छित दहेजक अभाव मे नारी वलिदान सन कुकृत्य पर समाज आ सरकारक उदासीनताक प्रति साकांक्ष करबाक

लेल एहि नाटकक रचना कयने छथि। नाटक मे समस्या आ समाधान दूनू देखाओल गेल अछि। तेसर कनियाँक प्रसंग डॉ0 श्रीश लिखलनि अछि – मणिपदमजीक एहि समाज सापेक्ष उद्देश्यपूर्ण नाटक मे समस्या ओ तकर समाधान दुहुक सफल निस्पादन भेज अछि।

एहि नाटक मे तिलक दहेजक दग्ध ताप सँ पीड़ित जिनजीक चित्र प्रस्तुत अछि। दहेजक विविध विभीषिका सँ सम्पूर्ण समाज आगिक ज्वाला जकाँ धधकि रहल अछि। नारी अर्द्धांगिनी नहि रहि गेलीह अछि सहभागिनी से हो नहि रहि गेलीह ओ तँ दहेज अनवाक मात्र साधन बनि गेलीह अछि। एहि पर आधारित सम्पूर्ण तेसर कनियाँ नाटक केन्द्रित अछि। सम्पूर्ण नाटक वारह दृश्य मे विभक्त अछि। प्रथम दृश्य मे प्रथम विवाहिता कैं हीरो होण्डा मोटर साइकिल दहेज मे नहि आनवाक कारणें डंटा सँ मारि कैं आधमरू कए दैछ आ पानिक वदला वोतल मे जहर दए दैछ, तरूणीक रूप मे प्रथम पत्नी जहर पीवि जीवन लीला समाप्त कऽ लैछ। दोसर दृश्य मे पुलिसक स्वरूप उजागर होइत अछि ओ चारि हजार टाका लऽ कैं केश कए समाप्त कए दैछ। तेसर दृश्य मे दोसर कन्याक पिता अवैध आ संग मे संगी से हो। पुनः दोसर कनियाँ सँ प्रिन्सक विवाह भए जाइत छन्हि। चारिम दृश्य मे दहेजक पियासल समाजिक चित्र प्रस्तुत अछि। पाँचम दृश्य मे दोसर कनियाँके मारि दैत छथि। छठम दृश्य मे नारीक सजगता आ जागृतिक विवेचना कएल अछि। सातम दृश्य मे तेसर कनियाँक विवाहक चर्चा भेल अछि। आठम दृश्य मे गुम–चुपे प्रिंस आ तेसर कनियाँ निरंजनाक विवाह भए जाइत छन्हि। नवम दृश्य मे गामक किछु नारी प्रिंसक करतुत पर चिन्ता व्यक्त करैत छलीह आ तरकारी वालीक अवित सँ प्रेरणा से हो लैत छलहि। दसम दृश्य मे तेसर कनियाँक अएवाक समता आ ओकर ताम–झामक वर्णन देखओल गेल अछि। एगारहम दृश्य मे प्रिंसक घर पर हिस्ट–पुस्ट डाकूक प्रवेश आ परिस्थितिक मूल्यांकन देखाओल गेल अछि। बारहम आ अंतिम दृश्य मे तेसर कनियाँ द्वारा नारी सजगताक संगहि नर पिशाच प्रिंसकें एरेस्ट कएल जाइछ। हंटरक चोट पर पहिल कनियाँ राजपुरावाली आ दोसर कनियाँ जपनावालीक हत्याक सभटा पोल खोलाएल जाइत अछि। वस्तुतः सम्पूर्ण नाटक दहेजक धधकैत आगि पर आधारित तेसर कनियाँ नाटक थिक।

संन्दर्भ :–

1. कालिदास ग्रन्थावली, द्वितीय खण्डम् मालविकाग्निमित्र, पृ0 265.
2. ना0शा0आ0–1, श्लोक 14–15.
3. ना0शा0आ0–1, श्लोक 114.
4. अ0द0 श्लोक–2, पृ0सं0 – 10–11
5. सन्दर्भेषु दशरूपकं श्रेयः। का0सू0 1/3/31
6. तद्धि चित्रं चित्रपखत विशेषसाकल्यात् 11 का0सू0 1/3/31
7. मणिपदमक काव्य कृतिक आलोचनात्मक अध्ययन – पृ0सं0– 121
8. आधुनिक नाट्य शास्त्र – पृ0सं0 – 2
9. मणिपदमक तेसर कनियाँ – पृ0सं0–1
10. डॉ0 दुर्गानाथ झा श्रीस – मैथिली साहित्यक इतिहास, पृ0सं0–293.